



# पत्र-पुष्प



## “समय की समीपता प्रमाण बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा सच्चे तपस्वी बन मन्सा सेवा के अभ्यासी बनो - शुभ प्रेरणार्थ” (21-9-21)

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा एक की लगन में मगन रहने वाले सच्चे त्यागी और तपस्वी, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी बाबा के नूरे रत्नों, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार – अब समय की समीपता प्रमाण बापदादा के सूक्ष्म इशारों को कैच करते हुए आप सब ब्रह्मा बाप समान त्याग तपस्या की मूर्त बन बेहद विश्व कल्याण की सेवा पर तत्पर होंगे! बाबा कहते बच्चे, अब दो चार घण्टे के तपस्वी नहीं लेकिन हर सेकेण्ड तपस्या-स्वरूप, तपस्वी मूर्त बनो। मूर्त और सूरत से त्याग, तपस्या और सेवा – साकार रूप में प्रत्यक्ष करो। ड्रामा की नूँध अनुसार इस बार मधुबन के सभी स्थानों पर इसी प्रकार की विशेष योग तपस्या के कार्यक्रम चल रहे हैं। छोटे-छोटे गुप्स में चारों ओर की टीचर्स बहिनों ने थोड़े समय में ही बाबा के घर में आकर बहुत अच्छी अनुभूतियां की हैं। खूब रिफ्रेश हो भरपूर होकर गईं। इसके साथ-साथ मानसरोवर, मनमोहिनी वन, ज्ञान सरोवर और पाण्डव भवन में भी अलग-अलग गुप्स आते रहते हैं, बाबा के बच्चों को जैसे तपस्या करने की यह गोल्डन लॉटरी मिल गई है। सभी बहुत रूचि और उमंग-उत्साह से, एकान्त के साथ एकाग्रता के अभ्यास द्वारा प्रभु मिलन का अलौकिक आनंद अनुभव कर रहे हैं। अभी फिर अक्टूबर मास से ऑन लाइन अव्यक्त मिलन के कार्यक्रम भी 12 गुप में रखे गये हैं। मार्च 2022 तक इसी प्रकार बाबा के नये पुराने ब्राह्मण बच्चों की स्व-उन्नति के कार्यक्रम चलते रहेंगे।

बाबा हम बच्चों से यही शुभ आश रखते हैं कि मेरा एक एक बच्चा अभी लाइट हाउस, माइट हाउस बनें। उसके लिए इस शरीर रूपी चोले को सेकण्ड में धारण करने और सेकण्ड में न्यारे बनने का अभ्यास करना है। बाबा कहते बच्चे अन्तिम पेपर में पास होने के लिए वा सर्व परिस्थितियों का सामना करने के लिए आकारी रूपधारी बनो, जब चलते फिरते लाइट हाउस हो जायेंगे तो आपका यह रूप दिखाई नहीं देगा। देखने वालों को अनुभव होगा कि यह तो लाइट के वस्त्रधारी हैं, लाइट ही इन्हीं का शृंगार है। तो बोलो, हमारे मीठे मीठे भाई बहिनें ऐसे डबल लाइट स्वरूप में रहने व अशरीरी बनने का अभ्यास कर रहे हो ना! अपने-अपने सेवास्थानों के वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाने के लिए अब हर एक को अव्यक्त स्वरूप की साधना करनी है। साधना अर्थात् बार-बार अटेन्शन की तपस्या। अभी जो भी समय मिला है उसे स्व-अभ्यास, स्व-साधना में सफल करते चलो। बाबा को जो भी सेवायें, जिस रूप से करानी है वह तो करायेगा ही। अभी आवश्यकता है अपनी अचल-अडोल एकरस स्थिति बनाने की। कोई भी छोटी मोटी बातें हमें हलचल में न लायें। इन पुराने शरीरों में रहते, पिछले किये हुए विकर्मों को योग अग्नि में दग्ध कर बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है साथ-साथ अपनी शक्तिशाली मन्सा द्वारा तमोगुणी वायुमण्डल को परिवर्तन करने की सेवा भी करनी है। अब एक भी श्वास, संकल्प, समय व्यर्थ न जाए, ऐसा अटेन्शन रख सभी पुरुषार्थ की रेस करते चलो। उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ते सफलतामूर्त बन परमात्म प्रत्यक्षता के कार्य को सम्पन्न करना है, फिर वापस घर चलना है। बोलो, यही धुन सबके अन्दर लगी हुई है ना।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,  
बी. के. रतनमोहिनी



# ये अव्यक्त इशारे



अक्टूबर 2021 - तपस्वी जीवन के लिए होमवर्क

## (अ) त्याग वृत्ति द्वारा तपस्वीमूर्त बनो

1) तपस्या अर्थात् एक बाप की लगन में रहना। किसी भी कार्य में सफलता-मूर्त बनने के लिये त्याग और तपस्या चाहिए। त्याग में महिमा का भी त्याग, मान का भी त्याग और प्रकृति दासी का भी त्याग – जब ऐसा त्याग हो तब तपस्या द्वारा सफलता स्वरूप बनेंगे।

2) अब अपने ईश्वरीय ब्राह्मणपन के, सर्वस्व त्यागी की पोजीशन में स्थित रहो। हृद की पोजीशन कि मैं सबसे ज्यादा सर्विसएबुल हूँ, प्लैनिंग-बुद्धि हूँ, इनवेन्टर हूँ, धन का सहयोगी हूँ, दिन-रात तन लगाने वाला हार्ड-वर्कर हूँ या इन्चार्ज हूँ... इस प्रकार के हृद के नाम, मान और शान के उल्टे पोजीशन को छोड़ अब त्यागी और तपस्वीमूर्त बनो।

3) तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लगन में लवलीन, प्रेम के सागर में समाए हुए, ज्ञान, आनन्द, सुख, शान्ति के सागर में समाये हुए को ही कहेंगे तपस्वी। ऐसे त्याग, तपस्या वाले ही सेवाधारी कहे जाते हैं।

4) वह आत्म-ज्ञानी भी जिस्मानी, अल्पकाल की तपस्या से अल्पकाल की सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं। आप रूहानी तपस्वी परमात्म ज्ञानी हो, तो आपका संकल्प आपको विजयी रत्न बना देगा। अनेक प्रकार के विघ्न ऐसे समाप्त हो जायेंगे जैसे कुछ था ही नहीं। माया के विघ्नों का नाम-निशान भी नहीं रहेगा।

5) तपस्वी की तपस्या सिर्फ बैठने के समय नहीं, तपस्या अर्थात् लगन, चलते-फिरते भोजन करते भी लगन लगी रहे। एक की याद में, एक के साथ में भोजन स्वीकार करना - यह भी तपस्या हुई।

6) जैसे ब्रह्मा बाप के संस्कारों में बेहद का त्याग और बेहद की तपस्या देखी। हर संकल्प में यही रहा कि बेहद का कल्याण कैसे हो। ऐसे बेहद के तपस्वी बनो। दो चार घण्टे के तपस्वी नहीं लेकिन हर सेकेण्ड तपस्या-स्वरूप, तपस्वी मूर्त। मूर्त और सूरत से त्याग, तपस्या और सेवा – साकार रूप में प्रत्यक्ष करो।

7) हरेक यही संकल्प लो कि हमें शान्ति की, शक्ति की किरणें विश्व में फैलानी हैं, तपस्वी मूर्त बनकर रहना है, अब एक दूसरे को वाणी से सावधान करने का समय नहीं है, अब मन्सा शुभ भावना से एक दूसरे के सहयोगी बनकर आगे बढ़ो और बढ़ाओ।

8) जैसे स्थूल अग्नि वा प्रकाश अथवा गर्मी दूर से ही दिखाई देती वा अनुभव होती है। वैसे आपकी तपस्या और त्याग की झलक दूर से ही आकर्षण करे। हर कर्म में त्याग और तपस्या प्रत्यक्ष दिखाई दे तब ही सेवा में सफलता पा सकेंगे।

9) जो निरन्तर तपस्वी हैं उनके मस्तक अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से सिवाए आत्मिक स्वरूप के और कुछ भी दिखाई नहीं देगा। किसी भी संस्कार वा स्वभाव वाली आत्मा, उनके पुरुषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी हुई हो लेकिन हर आत्मा के प्रति सेवा अर्थात् कल्याण का संकल्प वा भावना ही रहेगी। दूसरी भावनायें उत्पन्न नहीं हो सकती।

10) जैसे वह तपस्वी सदैव आसन पर बैठते हैं, ऐसे आप अपनी एकरस आत्मा की स्थिति के आसन पर विराजमान रहो। इस आसन को नहीं छोड़ो तब सिंहासन मिलेगा। आपकी हर कर्मेन्द्रिय से देह-अभिमान का त्याग और आत्म-अभिमान की तपस्या प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे।

11) ब्रह्मा की स्थापना का कार्य तो चल ही रहा है। ईश्वरीय पालना का कर्तव्य भी चल ही रहा है। अब लास्ट में तपस्या द्वारा अपने विकर्मों और हर आत्मा के तमोगुणी संस्कारों और प्रकृति के तमोगुण को भस्म करने का कर्तव्य करना है। जैसे चित्रों में शंकर का रूप विनाशकारी अर्थात् तपस्वी रूप दिखाते हैं, ऐसे एकरस स्थिति के आसन पर स्थित होकर अब अपना तपस्वी रूप प्रत्यक्ष दिखाओ।

12) जब तपस्वी तपस्या करते हैं तो वृक्ष के नीचे तपस्या करते हैं। इसका भी बेहद का रहस्य है, इस सृष्टि रूपी वृक्ष में आप लोग भी नीचे जड़ में बैठकर तपस्या कर रहे हो। वृक्ष के नीचे बैठने से सारे वृक्ष की नॉलेज बुद्धि में आ जाती है। यह जो आपकी स्टेज है, उसका यादगार भक्तिमार्ग में चलता आया है। यह है प्रैक्टिकल, भक्ति मार्ग में फिर स्थूल वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या करते हैं।

13) जैसे पहले-पहले नशा रहता था कि हम इस वृक्ष के ऊपर बैठकर सारे वृक्ष को देख रहे हैं, ऐसे अभी भी भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवा करते हुए तपस्या का बल अपने में भरते रहो। जिससे तपस्या और सेवा दोनों कम्बाइन्ड और एक साथ रहें।

14) देह-अभिमान को छोड़ना - यह बड़े ते बड़ा त्याग है। इसके लिए हर सेकेण्ड अपने आपको चेक करना पड़ता है। इस त्याग से ही तपस्वी बनेंगे और एक बाप से ही सर्व सम्बन्धों का अनुभव करेंगे।

15) समय की समीपता के प्रमाण अभी सच्चे तपस्वी बनो। आपकी सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य। अभी चारों ओर पावरफुल तपस्या करनी है, जो तपस्या मन्सा सेवा के निमित्त बनें, ऐसी पावरफुल सेवा अभी तपस्या द्वारा शुरू करो।

## (ब) साधना के आधार से साधनों को कार्य में लगाओ

16) विनाशी साधनों के आधार पर आपकी अविनाशी साधना नहीं हो सकती। साधन निमित्त मात्र हैं और साधना निर्माण का आधार है इसलिए अब साधना को महत्व दो। साधना ही सिद्धि को प्राप्त करायेगी।

17) सर्व प्राप्ति, सर्व साधन होते हुए भी साधनों में नहीं आओ, साधना में रहो। साधन होते हुए भी त्याग वृत्ति में रहो तब थोड़े समय में अनेक आत्माओं का भाग्य बना सकेंगे।

18) यह विनाश सर्व आत्माओं की सर्व कामनाएं पूर्ण करने का निमित्त साधन है। यह साधन आपकी साधना द्वारा पूरा होगा। ऐसा संकल्प इमर्ज होना चाहिए कि अब सर्व आत्माओं का कल्याण हो। सर्व तड़पती हुई, दुःखी और अशान्त आत्मायें वरदाता बाप और बच्चों द्वारा वरदान प्राप्त कर सदा शान्त और सुखी बन जाएं और अब घर चलें।

19) किसी भी स्थान के वायुमण्डल को पावरफुल बनाने के लिए अपने अव्यक्त स्वरूप की साधना चाहिए, इसका बार-बार अटेन्शन रहे। जिस बात की साधना की जाती है, उसी बात का ध्यान रहता है। अगर एक टाँग पर खड़े होने की साधना है तो बार-बार वही अटेन्शन रहेगा। तो यह साधना अर्थात् बार-बार अटेन्शन की तपस्या।

20) आप सभी अपने को बहुत बिज़ी समझते हो लेकिन अभी फिर भी बहुत फ्री हो। आगे चल और बिज़ी होते जायेंगे इसलिए स्व प्रति जितना भी समय मिले स्व-अभ्यास, स्व-साधना में सफल करते जाओ।

21) जैसे विशेष दिनों पर भक्त लोग व्रत रखते हैं, साधना करते हैं। एकाग्रता का विशेष अटेन्शन रखते हैं। ऐसे सेवाधारी बच्चों को भी यह वायब्रेशन आने चाहिए। सहज योग की साधना, साधनों के ऊपर अर्थात् प्रकृति के ऊपर विजयी हो। ऐसा न हो इसके बिना तो रह नहीं सकते, यह साधन नहीं मिला इसलिए स्थिति डगमग हो गई... इसको भी न्यारी जीवन नहीं कहेंगे।

22) समय प्रति समय वैभवों के साधनों की प्राप्ति बढ़ती जा रही है। आराम के सब साधन बढ़ते जा रहे हैं। लेकिन यह प्राप्ति बाप के बनने का फल मिल रहा है। तो फल को खाते बीज को

नहीं भूल जाना। आराम में आते राम को नहीं भूल जाना। सच्ची सीता रहना। मर्यादा की लकीर से संकल्प रूपी अंगूठा भी नहीं निकालना क्योंकि यह साधन बिना साधना के यूँ करेंगे तो स्वर्ण-हिरण का काम कर लेगा।

23) एक बाप दूसरा न कोई - यही आपकी अखण्ड-अटल साधना है। यह अखण्ड-अटल साधना वहाँ अखण्ड राज्य का अधिकारी बना देती है। यहाँ का छोटा-सा संसार बापदादा, मात-पिता और बहन-भाई, वहाँ के छोटे संसार का आधार बनता है।

24) साधनों को आधार नहीं बनाओ लेकिन साधना के आधार से साधनों को कार्य में लगाओ। यदि साधना की स्थिति में रह साधनों को कार्य में नहीं लगाते, कोई-न-कोई आधार को अपनी उन्नति का आधार बना देते हो तो जब वह आधार हिलता है, तो उमंग-उत्साह भी हिल जाता है। वैसे आधार लेना कोई बुरी चीज़ नहीं है लेकिन आधार को फाउण्डेशन नहीं बनाओ।

25) साधना अर्थात् शक्तिशाली याद। निरन्तर बाप के साथ दिल का सम्बन्ध। सिर्फ योग में बैठ जाना यही साधना नहीं है लेकिन जैसे शरीर से बैठते हो वैसे दिल, मन और बुद्धि चारों ही एक बाप की तरफ बाप के साथ-साथ समान स्थिति में बैठ जाएं - तब कहेंगे यथार्थ साधना।

26) साधना वाले का आधार सदा बाप ही होता है और जहाँ बाप है वहाँ सदा बच्चों की उड़ती कला है। जो साधना द्वारा बाप के साथ हैं, उनके लिए संगमयुग पर सब नया ही नया अनुभव होता है। हर घड़ी में, हर संकल्प में नवीनता क्योंकि हर कदम में उड़ती कला अर्थात् प्राप्ति में प्राप्ति होती रहेगी।

27) बापदादा जानते हैं कि पुराने शरीर हैं तो पुराने शरीरों को साधन चाहिये। लेकिन ऐसा अभ्यास जरूर करो कि कोई भी समय साधन नहीं हो तो साधना में विघ्न नहीं पड़ना चाहिये। जो मिला वो अच्छा। अगर कुर्सी मिली तो भी अच्छा, धरनी मिली तो भी अच्छा। जैसे आदि सेवा के समय साधन नहीं थे, लेकिन साधना कितनी श्रेष्ठ रही। तो यह साधना है बीज, साधन है विस्तार। तो साधना का बीज छिपाने नहीं दो, अभी फिर से बीज

को प्रत्यक्ष करो।

28) वर्तमान समय के प्रमाण अभी अपनी सेवा वा सेवा-स्थानों की दिनचर्या बेहद के वैराग्य वृत्ति की बनाओ। अभी आराम की दिनचर्या मिक्स हो गई है। अलबेलापन शरीर की छोटी-छोटी बीमारियों के भी बहाने बनाता है। अगर किसी पदार्थ की, साधनों की आकर्षण है तो साधना खण्डित हो जाती है।

29) वर्तमान समय अनेक साधनों को देखते हुए साधना को भूल नहीं जाना क्योंकि आखिर में साधना ही काम में आनी है। आज मन की खुशी के लिए मनोरंजन के कितने नये-नये साधन बनाते हैं। वह है अल्पकाल के साधन और आपकी है सदाकाल की सच्ची साधना। तो साधना द्वारा सर्व आत्माओं का परिवर्तन

करो। हाय-हाय लेकर आये और वाह-वाह लेकर जाये।

30) अभी चारों ओर साधना का वायुमण्डल बनाओ। समय समीप के प्रमाण अभी सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य। सेकण्ड में अपने को विदेही, अशरीरी वा आत्म-अभिमान बना लो, एक सेकण्ड में मन-बुद्धि को जहाँ चाहो वहाँ स्थित कर लो, इसको कहा जाता है - साधना।

31) अपनी साधना के स्वरूप से साधनों को कार्य में लाओ। साधनों को आधार नहीं बनाओ लेकिन अपनी साधना के आधार से साधन यूज करो। इन साइंस के वा ज्ञान के साधनों के आधार पर खुशी न हो।

## त्रिमूर्ति दादियों के प्रेरणादाई शिक्षाप्रद अनमोल महावाक्य (अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

**“ज्वाला स्वरूप स्थिति का अनुभव करने के लिए याद की लिंक सदा जुटी रहे, कोई व्यर्थ की लीकेज न हो”**

(गुल्जार दादी जी 30-01-06)

हम सबके चेहरे में तकदीर दिखाई देती है क्योंकि हमारे जैसा तकदीरवान कोई बन ही नहीं सकता है। ऐसी तकदीर कोई ने सुनी, सारे कल्प में सतयुग से अभी संगमयुग तक चक्कर लगाके देखो कि किसी की ऐसी तकदीर हुई है? चाहे देवतायें हैं लेकिन हम ब्राह्मणों की तकदीर सबसे श्रेष्ठ है क्योंकि एक जन्म में वो भी छोटा-सा जन्म और 21 जन्म की गैरन्ती की प्राप्ति है। ऐसा कभी भी नहीं सुना होगा कि एक जन्म के पुरुषार्थ की प्रारब्ध 21 जन्म मिले। तो ऐसी तकदीर की तस्वीर बाबा ने हमारी तो बना दी। सिर्फ अपनी तकदीर को ही सामने रखो तो दिल से निकलता है? वाह बाबा वाह! क्योंकि ऐसा बाबा भी कोई को नहीं मिलेगा, फिर ऐसा दिव्य जन्म और इतनी प्राप्ति भी किसी को नहीं हो सकती इसलिए बाबा कहते हैं कि दो बातों तरफ अटेंशन रखो। एक स्वयं के प्रति और दूसरा समय के प्रति अटेंशन रखो क्योंकि समय अनुसार जो कुछ करना होता है, वो समय को समझ करके ही चलना होता है।

एक तो स्वयं को स्मृति में रखो कि मैं कौन? मैं कौन का बहुत लम्बा उत्तर है। अगर आप लिस्ट निकालो मैं कौन हूँ? आत्मा तो हूँ लेकिन कौन-सी आत्मा हूँ? भगवान ने हमें क्या क्या

स्वमान दिये हैं वो स्मृति में रहें। हमारे जो भी टाइटल्स हैं वही हमारे स्वमान हैं। स्वमान की लिस्ट तो सबके पास है ना।

हमारे दिल में सिर्फ बाबा ही है और कोई नहीं है। अगर रावण की जरा सी भी कोई छोटी या मोटी चीज़ हमारे दिल में है तो उस चीज़ के बीच में बाबा तो नहीं बैठेगा ना! जबकि जड़ मूर्ति के लिए भी कितनी सफाई, कितनी शुद्धता रखते हैं। चाहे बाहर से करते हो या दिल से करते हो लेकिन स्वच्छता तो रखते हैं। तो हम सभी भी कहते हैं - मैं बाबा के दिल में हूँ और बाबा मेरे दिल में हैं। लेकिन इसमें यह चेक करना, बाबा बहुत जल्दी खिसक जाता है, अगर जरा भी कोई गन्दगी हुई तो बाबा बैठ नहीं सकता, इसलिए बाबा कहता है अगर मुझ भोलेनाथ बाबा को खुश करना है, तो सच्ची दिल साफ दिल हो। बाबा को और कुछ नहीं चाहिए। अगर सच्चाई और सफाई दोनों है तो भोलानाथ बाबा हमारे ऊपर राजी है ही है।

यह व्यर्थ संकल्प भी क्या है? रावण की जायदाद है या राम की? व्यर्थ समय, व्यर्थ संकल्प... इस तरह थोड़ी सी मात्रा में रावण की कोई चीज़ है तो बाबा नहीं बैठ सकता है। फिर कितना भी आप योग लगाओ और कहते रहो, बाबा आप मेरे हो लेकिन

मेरा नहीं हो सकता है। योग का अर्थ क्या है? जिगरी प्यार और जिससे प्यार होता है उसको जो बात, जो चीज़ अच्छी लगती वो करने से वो खुश होता है। तो बाबा को क्या अच्छा लगता है? सच्चाई सफाई और कुछ भी नहीं चाहिए। तो योग माना बाबा की सच्चे दिल से याद। तो सुख की या दुःख की बात जब दिल में लग जाती है तो वो जल्दी भूल नहीं सकते हैं इसलिए बाबा कहते हैं दिल से मुझे याद करते रहो। कहते भी हैं एक बाबा दूसरा न कोई, अगर कोई तीसरा है तो उनका तीसरा नेत्र बन्द हो जाता है। जब तीसरा नेत्र ही बन्द हो जाता है तो फिर क्या देखेंगे! इसलिए बाबा को सिर्फ दिल चाहिए और वो भी सच्ची साफ दिल चाहिए। वैसे भी जिससे जितना गहरा सम्बन्ध होता है, उतना न चाहते हुए भी याद आती है। हम सभी कोशिश तो यही करते हैं कि बाबा के सिवाए और कुछ याद नहीं आवे लेकिन फिर भी अगर याद आती है तो जरूर उससे मेरेपन का सम्बन्ध होता है और जितना गहरा सम्बन्ध होता है, उतनी याद स्वतः आती है। और दूसरी चीज़ होती है प्राप्ति, बिना प्राप्ति के कोई याद नहीं आता है। जब हमारा मन थोड़ा चंचल होता है तो उस समय याद करने की कोशिश करते हैं लेकिन याद नहीं आती है क्योंकि पुराने संस्कार का वार होता है। ऐसे समय पर एक एक प्राप्ति की डिटेल को अपने मन में सोचो। बाबा ने क्या बनाया और क्या दिया? अपने मन को इसमें बिजी कर दो तो फिर वो दूसरी बातें भूल जायेंगी, बाबा की याद आटोमेटिकली आयेगी।

अभी तो बाबा ने कहा है सिर्फ बाबा शब्द नहीं कहो, मेरा बाबा कहो। बाबा में जितना मेरापन होगा, मेरा है, मेरे लिए आया है, तो जहाँ मेरा होता है वहाँ अधिकार होता है। जहाँ अधिकार होता है, वहाँ याद स्वतः आता है। तो बाबा ने हमको मास्टर सर्वशक्तिवान की अथॉरिटी जो दी है और साथ में जो अधिकार दिये हैं उसको भी याद करो। अगर अथॉरिटी याद होगी तो मन यहाँ वहाँ चंचल नहीं होगा क्योंकि अथॉरिटी वाले की ऑर्डर मानी जायेगी इसलिए बाबा ने कहा अधिकार भी रखो, तो अथॉरिटी में भी रहो यानि स्मृति की सीट से उतरो नहीं, उस सीट पर बैठ ऑर्डर करो तो आपका मन सदा जहाँ चाहो, जितना समय चाहो, उतना समय वहाँ रह सकता है। फिर वेस्ट थॉट नहीं आयेंगे क्योंकि अपनी अथॉरिटी में हैं।

ज्वालारूप क्या है? यह भी याद की ही एक स्टेज है। देह-अभिमान से निकल देही-अभिमानि बनना जिसको सोल-कान्सेसनेस कहते हैं। फिर ज्ञान की जो भी बातें हैं, वरदान, स्लोगन जो भी सुनते हैं उसमें मनन करना। ज्ञान के मनन से मन को समर्थ बनाना। फिर रूहरिहान भी कर सकते हैं। और लास्ट में पॉवरफुल स्टेज है बीजरूप। यह चार स्टेज बाबा ने हमें लकीर खींचके दी है, तो इस लकीर से दूर नहीं हो जाओ तो व्यर्थ खत्म

हो जायेगी। बीजरूप अवस्था का मतलब है बिल्कुल सर्वशक्तियों के स्वरूप में स्थित हो जाना। सर्वशक्तिवान की सर्वशक्तियों की अथॉरिटी में रहना, तो सर्वशक्ति के स्वरूप की स्मृति हो। अपने में पॉवर हो कि यह सर्व शक्तियाँ जैसे आत्मा में समाई हुई हैं। वो स्वरूप हो बीजरूप का। तो यह जो बाबा कहता है ज्वाला रूप बनना, तो ज्वाला रूप माना जो बीजरूप की स्थिति है, उसी में रहना लेकिन उसमें भी विशेष लाइट हाउस, माइट हाउस के स्वरूप में स्थित होना। सर्व शक्तियों के लाइट रूप में स्थित होना, यह है पॉवरफुल स्टेज। ज्वालामुखी माना मास्टर सर्वशक्तिवान की अथॉरिटी में रहना। न रूहरूहान, न मनन, न सोल-कॉन्सेस की स्मृति बार-बार हो, मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ लेकिन उस स्वरूप में आलमाइटी अथॉरिटी के सर्वशक्तियों का बीजरूप हो करके लाइट हाउस बन करके रहना। जब आप लाइट हाउस बनेंगे तो उसमें यह विचार नहीं चलेंगे कि मैं लाइट हूँ, मैं लाइट दे रहा हूँ, नहीं, लाइट हाउस का काम ही है लाइट देना। ज्वालामुखी का अर्थ है – एकदम लाइट हाउस, माइट हाउस... मेरे में लाइट भी है, माइट भी है, सर्वशक्तियाँ भी हैं। वो अथॉरिटी वाली स्टेज और उसमें स्थित होने से आटोमेटिकली विश्व की आत्माओं के प्रति वो लाइट और माइट जाती रहेगी। सर्वशक्तियों की लाइट माइट जो है, उसी स्थिति में स्वरूप बन जायें, उस सीट पर सेट हो जायें तो ज्वालामुखी स्थिति हो जायेगी। बाकी सब जो भी याद करने के तरीके हैं, वो भी याद की ही स्टेजेस हैं लेकिन वो पॉवरफुल है ज्वालामुखी की स्टेज, जिसमें बाबा कहते हैं संस्कारों का भी संस्कार कर सकते हैं।

तो ज्वालामुखी स्थिति तब आपकी हो सकती है जब बार-बार आप चेक करो, इस लाइट माइट हाउस के स्वरूप की स्मृति में हूँ? अपना लिंक चेक करते रहो, अगर बार-बार लिंक टूटता रहेगा तो फिर कितना भी आप जोड़ लो लेकिन गिरी हुई चीज़ में ताकत कम हो जाती है। जैसे रस्सी मानो टूट गई उसको हम जोड़ लेते हैं लेकिन उसकी ताकत तो कम हो जाती है। टूटने-जोड़ने में ताकत कम हो जाती है इसलिए मुझ आत्मा का परमात्मा से लिंक सदैव जुटा रहे। लिंक टूटा तो शक्ति कैसे आयेगी? शक्ति नहीं मिलेगी तो निर्बल हो जायेंगे फिर माया का वार होता रहेगा इसलिए बाबा ने अटेन्शन खिचवाया कि लिंक को चेक करो। दूसरा अपनी लीकेज को भी चेक करो, लीकेज है वेस्ट थॉट और वेस्ट टाइम। चलो वेस्ट नहीं किया लेकिन बेस्ट कितना किया? बीच-बीच में लीकेज होता रहा तो खाली हो जायेंगे इसलिए एक लीकेज चेक करो, दूसरा लिंक जोड़ो। तो ज्वालामुखी बनने के लिए ये दोनों बातें चेक करते रहो। अगर दोनों ही बातें ठीक हैं तो फिर ज्वालामुखी स्थिति में स्थित हो सकेंगे।

जो भी करना है वो बहुतकाल का अभ्यास करो क्योंकि यह बहुतकाल का अभ्यास ही अन्त में काम आयेगा। सभी चाहते हैं हम 8 घण्टा याद में रहें लेकिन बीच-बीच में किसी न किसी रूप में रूकावटे आती हैं। कोई चाहते नहीं हैं फिर भी ऐसा क्यों होता है? क्योंकि बहुतकाल की विस्मृति का संस्कार खींचता है। 63 जन्म विस्मृति के संस्कार रहे हैं ना। बहुतकाल अगर स्मृति में

रहने का अभ्यास नहीं होगा, तो पास कैसे होंगे? अन्त मते सो गति क्या होगी? बहुतकाल का अभ्यास बहुत जरूरी है। बहुतकाल को अण्डरलाइन करो तो तीव्र पुरुषार्थ होगा, बल मिलेगा। डायरेक्शन अनुसार चेकिंग के साथ चेंजिंग भी होती रहे, तो आत्मा चार्ज होती रहेगी, चियरफुल रहेंगे। बाबा की श्रीमत पर पूरा फॉलो करते रहो। अच्छा।

**“महान भाग्यशाली वह है जो लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन कर दे,  
पिताव्रत और सतीव्रत बनकर रहे”**

(दादी जानकी जी 14-02-2006)

हम बाबा के बच्चों की इंगेजमेन्ट के साथ-साथ शादी भी हो जाती है, पक्का सौदा कर लेते हैं। मैं कहूंगी इन जैसा कोई नहीं मिलेगा, वो कहेगा इन जैसी सच्ची सजनी कहाँ मिलेगी! पिताव्रत और सतीव्रत। पिताव्रत में कोई वर्से की परवाह नहीं करेगा या जबरदस्ती वर्सा ले लेगा। सतीव्रत में यह सब नहीं चलता है, सतीव्रत में सच्चाई, इमानदारी और वफादारी चाहिए। जैसे चलाये हॉ जी। पिताव्रत में कभी हूँ हॉ करेगा, सतीव्रत में कभी नहीं कहेगा, नेवर। जैसे मम्मा बाबा के बाजू में बैठ सारा टाइम बाबा को देखती रहती, कभी सामने में मम्मा ने हमको नहीं देखा होगा। शुरू के दिनों कराची में बाबा 3-3 घण्टे मुरली चलाता था। फिर धीरे-धीरे टाइम फिक्स कर लिया।

बाबा मुरली के समय कारोबार की बात कभी नहीं करेगा, हॉ जितना जरूर कहेगा, आज टोली क्या मिलेगी? बाकी और कोई कारोबार नहीं। मुरली के बाद भी फौरन कारोबार नहीं। मुरली के बाद मुरली को रिवाइज कराते थे, तो उसी नशे के मीठे अनुभव में खो जाते थे। वो फीलिंग है सदा स्मृति स्वरूप रहने में मदद करती है। अपनी वा अन्य की पुरानी बात अगर भूलना सहज नहीं लगता है तो योग नहीं है। अगर पुरानी स्मृति के आधार से व्यवहार में आते, बोल-चाल में टोन्टिंग की ट्यूनिंग सुनाई देती तो यह भी योगी के लक्षण नहीं। योगी के जीवन में अलौकिकता वा दिव्यता होने कारण उसके बोल अर्थ सहित होंगे, स्वीकार करने लायक होंगे। अलौकिकता में लौकिकता मिक्स न हो, कोई गिने चुने बाबा के बच्चे हैं, जिन्होंने फट से लौकिक से अलौकिक जीवन बना दी। तो ऐसे बाबा के बच्चे कोई भी आगे जा सकते हैं।

हमारे पास अगर निश्चय का बल है, तो उड़ाने वाले को इज़ी हो जाता है, हमें निश्चय का बल उड़ा लेता है। उड़ने वाले को

उड़ना है तो उड़ाने वाले को ऊपर खींचने में देरी नहीं लगती है। पर अभी यहाँ ही बैठना है, यहाँ की दुनिया को ही देखना है, यहाँ के संस्कार अनुसार चलना है, तो बाबा भी आखिर देखता है, बाबा ऐसे हम बच्चों को छोड़ता नहीं है। कोई भी घड़ी आये बच्चा उड़े। अपनी च्वाईस का भी बन्धन है। इतना बड़ा चांस मिलता है फिर भी कोई और च्वाईस रखता है, तो उसे क्या कहें। अभी तक जिसके मन में है कि मेरी तो यह च्वाईस है, तो वह भी कहेगा अच्छा भले। बाबा कितना ऊंच उठने का चांस दे रहा है, लॉटरी मिल रही है। अचानक किसी को लॉटरी मिलती है तो वो पागल हो जाते हैं। यहाँ भी कोई लॉटरी मिलती है तो पागल बन जाते हैं। कितनी बड़ी राजाई मिलती है, तो अपने दिल से बातें करो – बाबा ने क्या दिया है, कितना दिया है? तो दिल में और कोई बात आती ही नहीं है। तो लौकिक को अलौकिक में बदल लेना, यह है महान भाग्यशाली का काम। भाग्य बनाने की लॉटरी मिली है। तो कोई भी बात दिल में, मन में रखने के लिए जिसके पास स्थान ही नहीं है, वही औरों को आप समान बना सकेंगे। आप समान बनाने वाले को देखके प्रेरणा मिलती है कि इन जैसा मेरे को पुरुषार्थ करना चाहिए।

पहले बाबा कहते थे बच्चे दूसरों को भी आप समान बनाओ। लेकिन आप समान बनाना माना अपने जैसा बनाना, मेरे में कुछ कमी-कमजोरियाँ भी होंगी तो उस बिचारे की क्या गति होगी? अभी बाबा कहते हैं बच्चे बाप समान बनो और बनाओ। बाबा को सामने रखके इशारा दो ताकि वह भी समानता में आ जाये, ऊंचे पुरुषार्थ में समानता आ जाये। हर बात में न्यारे बनने में और भाग्यवान बनने में, खुशानसीब बनने में समान तो क्या, इससे भी आगे बढ़े। कभी कोई बड़े ऊंचे महारथी को भी किसी से ईर्ष्या हो जाती है। वो नहीं चाहेंगे कि यह आगे चला जाये और मैं पीछे हो



जाऊं। परन्तु सच्चा पुरुषार्थी इस बात को भी असुल नहीं देखता है। अपनी घोट तो नशा चढ़े, जो ओटे सो अर्जुन। जो आपेही करे वो देवता। तो हम किसी को देख करके आगे नहीं जा सकते हैं। गुण उठावे पर अपनी घोट तो नशा चढ़े। जो आपेही करे, बाबा को देख करके करे, वही देव पद पा सकता है। ऐसी अच्छी-अच्छी, ऊंची-ऊंची बातें हैं, उसको छोड़ करके हम बीच की बातों में क्यों रहे? जो खुद ही बीच भँवर में भटक रहा है, वह औरों को क्या रास्ता दिखायेगा! उनके संग में तो और ही भटकेगे।

तो हरेक अपने पुरुषार्थ में एक बाबा को सामने रखे, सीधी राह पर चले। न इधर देखे, न उधर देखे, न पास्ट की बातों का कोई चिंतन करे। फ्यूचर का फिक्र अब करे, ऐसा केयरलेस

होकर न चले। दिन-रात अपने पुरुषार्थ के लिए इतनी धुन लगी रहे तभी शंखध्वनि होगी, आवाज़ दूर तक पहुँचेगा। तो पुरुषार्थ ऐसा हो जो हमारा चिंतन शुद्ध, श्रेष्ठ बनता जाये। आपस में 10-15 होंगे तो कहेंगे मैं अच्छी हूँ, और सब कहेंगे हाँ यह अच्छी है लेकिन जब मधुबन में 500-1000 के बीच में आयेंगे फिर देखें। अभी तो लाखों बी.के. हो गये हैं, उसके बीच में बोले, हर कोई बोले हाँ यह अच्छा है। बाबा भी सर्टिफिकेट देवे ना। तो अपने ऊपर इतना ध्यान रखना पड़ेगा। हमें न सिर्फ पास होना है, लेकिन पास विद ऑनर में आना है। जो एक मिनट भी बाबा को भूलेंगे वो पास विद ऑनर में नहीं आयेंगे। जो श्रीमत को सिरमाथे पर रखेंगे अपनी मनमत नहीं चलायेंगे वही पास विद आनर बनेंगे। अच्छा।

## दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

# बाहर की बातों से अन्तर्मुख बनो तब बाबा की आकर्षण में अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होगी (1998)

1) सेकेण्ड में इस देह की स्मृति से परे जा सकते हो? क्योंकि हम राजयोगियों का जो अपने इस योग का अनुभव है - वह वास्तव में अनुभव है ही कि यहाँ बैठे-बैठे उड़कर जावें। बाबा के वतन में सन्देशियाँ उड़कर जा सकती, वह तो ट्रान्स है। हम लोग बुद्धि से अपने फरिश्तों की अव्यक्त दुनिया में बाबा से मिलन मनाने उड़ जाएं। इस शरीर से अशरीरी न्यारे बन, उसी फरिश्तों की दुनिया में, लाइट की दुनिया में अव्यक्त बाबा के सामने मिलन मनायें, तो इस जैसा अतीन्द्रिय सुख कोई नहीं है। यह दिल के अनुभव का गीत वही गा सकते जो इसकी प्रैक्टिस करते और बराबर उस परम आनन्द का अनुभव करते। कहते हैं गोपियों को अतीन्द्रिय सुख था, यह प्रैक्टिकल में हम राजयोगियों के सुख का ही गायन है। जितना इस देह से न्यारे बन आत्मा निश्चय कर और फिर बाबा से मिलन मनाओ तो इस मिलन से बाबा सर्व शक्तियाँ भर देता, जिसको ही तपस्या कहा जाता है। यही राजयोग है। इसका निरन्तर अभ्यास चाहिए, भट्टी चाहिए।

2) हमने देखा है जिनको इस याद का, योग का अनुभव है, उनकी बुद्धि सहज ही दुनिया की सर्व बातों से हट जाती है और ऐसी प्रैक्टिस करने वालों की दृष्टि में शक्ति रहती है क्योंकि वृत्ति में एक बाबा ही रहता। स्वयं को बाबा के साथ कम्बाइन्ड देखते। जब तक इस योग की अनुभूति गहरी नहीं करेंगे तब तक शक्तियाँ

नहीं मिलेंगी। जो भी पॉवर्स हैं वो इस योग साधना से मिलती हैं। इस साधना से माया पर विजयी बन सकते हैं। ज्ञान हमारी पढ़ाई है, जिस पढ़ाई को बुद्धि में धारण करना है। और जितनी ज्ञान की गहरी प्वाइन्ट्स बुद्धि में धारण होंगी उतना ही बुद्धि फिर दिल से बाबा की शुक्रिया का गीत गायेगी। और जितना याद की यात्रा करेंगे उतना अपने को वरदानों से भरपूर अनुभव करेंगे क्योंकि यह याद ही हमें वरदाता बाप से वरदान दिलाती, इसी से समीप हो जाते हैं। फिर दिल से गीत निकलता बाबा आपको पाकर हमने तो जहान पा लिया। ऐसी लगन वाले ही सच्चे आशिक बन माशुक की याद में रहते हैं।

3) मधुबन में आते हो तो यहाँ दो बातें ही हैं - एक तो ज्ञान के गहरे धारणा के क्लासेस मिलते या रोज सुबह शाम योग में रहने की प्रैक्टिस करते, यही प्रैक्टिस दिन भर करते रहो तो बहुत मदद मिलती है। हर घण्टे पाँच मिनट भी साइलेन्स की अनुभूति करो तो अनेक बातों पर विजय पाने की शक्ति आयेगी, जो बाबा कहते माया पर विजय पहनो, वह विजय तभी होगी जब ज्ञान सहित योग में रहो। फिर माया नहीं आयेगी, बुद्धि यहाँ वहाँ नहीं जायेगी। मुरली ज्ञान में पक्का कराती परन्तु सवेरे का योग अशरीरी बनने में बहुत बड़ा बल देता है इसलिए योग में सचमुच यह अनुभव हो जैसे हम इस देह से उड़ जायें और लगता वतन में बाबा के पास पहुँच गये हैं।

4) निराकारी दुनिया तो परमधाम है लेकिन अव्यक्त वतन, सूक्ष्म वतन यह हमारे संगम की विशेषता है। उसका हमें हरेक को अनुभव चाहिए, जहाँ से बाबा हमें मिलने आते हैं। तो इसके लिए जितनी-जितनी बुद्धि शुद्ध बनेंगी, बाहर की बातों से अन्तर्मुख होगी, उतना ही बाबा की आकर्षण रहेगी। सचमुच हमें भगवान की आकर्षण हो रही है, यह अनुभव चाहिए। जैसे कई बार बाबा कहते कि बांधेलियों को बाबा से मिलने की आकर्षण होती कि कहाँ छुट्टी मिले तो हम बाबा से, भगवान से मिलने के लिए भागूँ। जैसे दुःख में सिमरण सब करें जैसे बांधेलियों पर बन्धन है तो वह जास्ती याद करती हैं। आप लोग छुटेले हैं तो मस्त रहते हैं। अच्छा है, मौज है, मस्त रहते यह भले अच्छा है लेकिन लगन एक अलग चीज़ है। वह ऐसी लगन होती जो रात को नींद भी उड़ जाती और मन कहता बाबा के पास जाके बाबा से रूहरिहान करते रहें। कैसे बाबा लाइट के वतन में हमें लाइट रूप में ले जाता। खुद भी लाइट रूप बन जाओ तो बाबा लाइट रूप बन आप लोगों से मिलन मनावे। यही है रूहानियत की यात्रा। यह यहाँ से स्पेशल अण्डरलाइन करके जाना है कि हमें ऐसी रूहानी यात्रा की रूचि रख बाबा से मिलन की अनुभूति करनी और करानी है।

5) कईयों में योग की बहुत रुची होती, कईयों में नहीं होती। रुची है तो योग में सुख मिलेगा, अगर रुची कम है तो बाबा के मिलन का सुख अनुभव नहीं होगा। जैसे सेवाओं में रुचि रखते तो सेवा के साथ-साथ मेवा भी खाते रहते। इससे कितनी आत्माओं का कल्याण होता - यह अनुभव करते रहते हो। दूसरों को कोर्स कराना माना खुद करना।

6) सदा बाबा की छत्रछाया के नीचे रहो तो रक्षक बाबा सदा रक्षा करता रहेगा। बाबा कहते बच्चे, तुम मेरी नजरों में छिप जाओ। बाबा की मुरली में है वो मेरे मीठे-मीठे नूरे रत्नों, यह किसने बोला? नूर माना आंखें। तो हम बाबा के नयनों के नूर हैं। इससे बड़ा भाग्य और क्या चाहिए! है कोई दुनिया में जो कहे कि हम भगवान के नयनों के नूर हैं। हमें भगवान कहता तुम मेरे नयनों के तारे हो। बाबा ने अपनी नजरों में हमें छिपा दिया है। बाकी तो दुनिया के खेल हैं, चाहे बीमारी है, आना है - जाना है, सर्विस करो उसमें आंधी भी आती, तूफान भी आते, यह वह सब होता परन्तु अपनी स्थिति स्थिर चाहिए।

7) सबसे पहले अपनी हर प्रकार से स्थिर स्थिति चाहिए। कोई कितना भी मन खराब करे, संग में कभी नहीं आना। इस एज में सबसे बड़ा दुश्मन है - संग। संगदोष बुद्धि को बदल देता है। सबसे प्यार करो सब फ्रैन्ड्स हैं, पर्सनल फ्रैन्ड किसको नहीं बनाओ। यह एक अण्डरलाइन करो। हमारी प्यारी रूहरिहान

होती है - अपने रूहों को राहत देने की, ज्ञान की रूहरिहान करेंगे, सेवा की रूहरिहान करेंगे, सर्विस के प्लान करेंगे, आपस में जो भी लेन-देन करेंगे, मीटिंग करेंगे इसीलिए कि उससे कोई भी यज्ञ की कारोबार है, जो भी कुछ है उनका हल करना है। बाकी दिल तो दिलबर को दी, बाकी दिल में क्या है? कोई कहते दिल की लेन देन करते, हमारे दिल की बातें कौनसी होती हैं, जो लेन-देन करें? दिल की बातें यही हैं - वाह मेरा बाबा! उनके सिवाए कोई दिल की बातें नहीं हैं। पर्सनल किसी के साथ बैठकर बातें करना, यह दोस्ती नहीं, दिल की बातें नहीं हैं लेकिन संगदोष है। एक दूसरे के प्रति मन खराब करना - यह ऐसी है, वह वैसा है - यह गलत है।

8) आपस में हल्कापन जरूर हो, जो एक दो को अपनी बात कह सको। अगर मैंने कोई गलती की, तो आप मुझे बड़ी दिल से बोल सकते हो! बहन, आज तुमने यह बात गलत की, वह मैं दिल से स्वीकार करती हूँ लेकिन वह दूसरे को मत सुनाओ। उससे मन खराब होता है। जब दो के बीच तीसरा तेरा मेरा करता तो तीन के बीच टकोरा पड़ता, माना डिसयुनिटी होती है। आपस में चाहे तीन हो या पाँच हो लेकिन रहना चाहिए सभी को मिलकर। रात को सोने से पहले दस मिनट भी आपस में मिलकर, ओम् शान्ति करके रूहरिहान करके फिर सो जाओ। कहने का भाव है कि आप लोग मन से भी खुश रहो, तन से भी खुश रहो। तुम भी खुश रहो तेरे से भी सब खुश रहें। सेन्टर में खुशनसीबी का वातावरण हो। आने वाले समझें, यहाँ हम आये तो कितना खुश होके गये। किसके भी चेहरे से उदासी, घृणा, नफरत यह फील नहीं हो तब तो मज़ा है। फिर भी अगर कोई 19-20 बात हो तो आप लोग अपनी तपस्या से उनको मिटाओ। हमारी रूहानी आकर्षण भी एक तपस्या है जो सबको सकाश देगी।

9) टीचर्स माना लौकिक अलौकिक से नष्टोमोहा। टीचर्स माना एक बाबा दूसरा न कोई। एक बाबा ही याद है और कोई याद नहीं। तुम्हीं से उठूँ, तुम्हीं से खाऊँ, तुम्हीं से बोलूँ, तुम्हीं से रास रचाऊँ... एक ही बाबा से ही सब करो। अगर टीचर के अन्दर थोड़ा भी कहाँ मोह है जिसको आप कहते हैं प्यार है। वह प्यार नहीं, मोह है। नष्टोमोहा, स्मूर्तिलब्धा... उसका नाम है टीचर। बस, एक बाबा ही बुद्धि में हो। बाबा मम्मा की तरह हमें भी सदा नष्टोमोहा रहना है। टीचर माना मास्टर ब्रह्मा। टीचर की जैसी स्थिति होगी ऐसे ही वो दूसरों को भी अपने अनुभव से सुनायेगी। वह सदा एक बाबा में ही लवलीन है तो अपार खुशी है। जो सचमुच नष्टोमोहा है उसे बाबा की बहुत मदद रहती है।

॥ ओम् शान्ति ॥